PALASH
THHAKUR

आरती संग्रह

** जगदीश जी आरती **

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे | भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे |
ॐ जय जगदीश हरे || - - -

जो ध्यावे फल पावे, दुःखबिन से मन का, स्वामी दुःखबिन से मन का | सुख सम्पति घर आवे (2) कष्ट मिटे तन का | ॐ जय जगदीश हरे || - - -

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी, स्वामी शरण गहूं मैं किसकी | तुम बिन और न दूजा, तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी | ॐ जय जगदीश हरे || - - -

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी | पारब्रह्म परमेश्वर, पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी | ॐ जय जगदीश हरे || - - -

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालनकर्ता | मैं मूरख फलकामी मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता | ॐ जय जगदीश हरे || - - -

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति | किस विधि मिलूं दयामय, किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति | ॐ जय जगदीश हरे || - - -

दीन-बन्धु दुःख-हर्ता, ठाकुर तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे | अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ द्वार पड़ा तेरे | ॐ जय जगदीश हरे || - - -

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वमी पाप हरो देवा | श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा | ॐ जय जगदीश हरे || - - -

** गणेश जी आरती **

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
एक दंत दयावंत, चार भुजाधारी । माथे पर तिलक सोहे, मूसे की सवारी ॥ (२)
पान चड़ें, फूल चड़ें और चड़ें मेवा । लड्डुअन को भोग लगे, संत करे सेवा ॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
अंधें को आँख देत, कोड़िन को काया । बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥ (२)
सूरश्याम शारण आए सफल कीजे सेवा | माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
सुख करता दुखहर्ता, वार्ता विघ्नाची, नूर्वी पूर्वी प्रेम कृपा जयाची, सर्वांगी सुन्दर उटी शेंदु राची, कंठी झलके माल मुकताफळांची । जय देव जय देव, जय मंगल मूर्ति, दर्शनमात्रे मनःकमाना पूर्ति, जय देव जय देव ॥
रत्नखचित फरा तुझ गौरीकुमरा, चंदनाची उटी कुमकुम केशरा, हीरे जडित मुकुट शोभतो बरा, रुन्झुनती नूपुरे चरनी घागरिया । जय देव जय देव, जय मंगल मूर्ति, दर्शनमात्रे मनःकमाना पूर्ति, जय देव जय देव ॥
लम्बोदर पीताम्बर फनिवर वंदना, सरल सोंड वक्रतुंडा त्रिनयना, दास रामाचा वाट पाहे सदना, संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुरवर वंदना । जय देव जय देव, जय मंगल मूर्ति, दर्शनमात्रे मनःकमाना पूर्ति, जय देव जय देव ॥
शेंदुर लाल चढायो अच्छा गजमुख को, दोन्दिल लाल बिराजे सूत गौरिहर को, हाथ लिए गुड लड्डू साई सुरवर को महिमा कहे ना जाय लागत हूँ पद को । जय जय जय जय जय, जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता, धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मत रमता, जय देव जय देव ॥
अष्ट सिधि दासी संकट को बैरी, विघन विनाशन मंगल मूरत अधिकारी, कोटि सूरज प्रकाश ऐसे छबी तेरी, गंडस्थल मद्मस्तक झूल शशि बहरी । जय जय जय जय जय, जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता, धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मत रमता, जय देव जय देव ॥
भावभगत से कोई शरणागत आवे, संतति संपत्ति सबही भरपूर पावे, ऐसे तुम महाराज मोको अति भावे, गोसावीनंदन निशिदिन गुण गावे । जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता, धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मत रमता, जय देव जय देव ॥

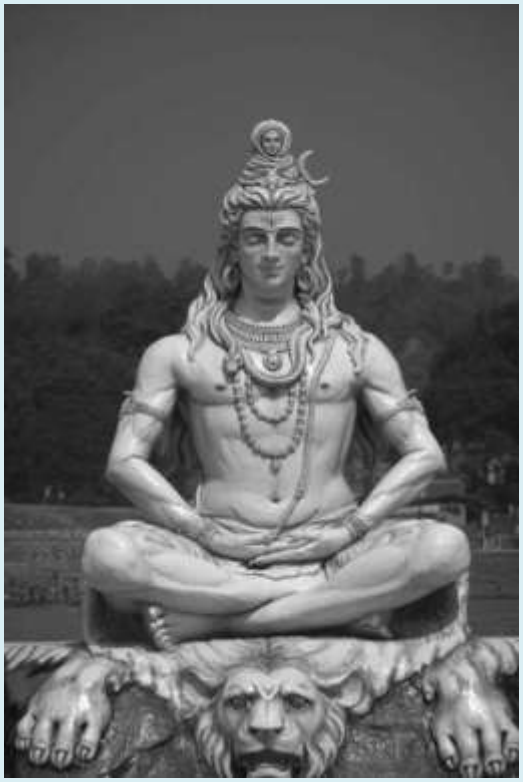

** शिव जी आरती **

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा। ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे। हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे॥ ॐ जय शिव ओंकारा॥

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे। त्रिगुण रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥ ॐ जय शिव ओंकारा॥

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी। त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी॥ॐ जय शिव ओंकारा॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे। सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे॥ ॐ जय शिव ओंकारा॥ कर के मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूलधारी। सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी॥ ॐ जय शिव ओंकारा॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ ॐ जय शिव ओंकारा॥

लक्ष्मी व सावित्री पार्वती संगा। पार्वती अर्द्धांगी, शिवलहरी गंगा॥ ॐ जय शिव ओंकारा॥

पर्वत सोहैं पार्वती, शंकर कैलासा। भांग धतूर का भोजन, भस्मी में वासा॥ ॐ जय शिव ओंकारा॥

जटा में गंग बहत है, गल मुण्डन माला। शेष नाग लिपटावत, ओढ़त मृगछाला॥ ॐ जय शिव ओंकारा॥

काशी में विराजे विश्वनाथ, नन्दी ब्रह्मचारी। नित उठ दर्शन पावत, महिमा अति भारी॥ ॐ जय शिव ओंकारा॥

त्रिगुणस्वामी जी की आरति जो कोइ नर गावे। कहत शिवानन्द स्वामी, मनवान्छित फल पावे॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा। ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

** लक्ष्मी माँ आरती **

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।

तुमको निस दिन सेवत हर-विष्णु-धाता॥ ॐ जाय लक्ष्मी माता

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता। सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥

ॐ जाय लक्ष्मी माता

तुम पाताल-निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता॥

ॐ जाय लक्ष्मी माता

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥

ॐ जाय लक्ष्मी माता

जिस घर तुम रहती, तहं सब सद्गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥

ॐ जाय लक्ष्मी माता

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता। खान-पान का वैभव सब तुमसे आता॥

ॐ जाय लक्ष्मी माता

शुभ-गुण-मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता॥

ॐ जाय लक्ष्मी माता

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कई नर गाता। उर आनन्द समाता, पाप शमन हो जाता॥

ॐ जाय लक्ष्मी माता

** अम्बे माँ आरती **

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥

मांग सिंदूर बिराजत टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोउ नैना चंद्रबदन नीको ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै। रक्तपुष्प गल माला कंठन पर साजै ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥

केहरि वाहन राजत खड्ग खप्परधारी। सुर-नर मुनिजन सेवत तिनके दुःखहारी ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥

कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती। कोटिक चंद्र दिवाकर राजत समज्योति ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥

शुम्भ निशुम्भ बिडारे महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥

चौंसठ योगिनि मंगल गावैं नृत्य करत भैरू। बाजत ताल मृदंगा अरू बाजत डमरू ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥

भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्परधारी। मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती। श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥
श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावै। कहत शिवानंद स्वामी सुख-सम्पत्ति पावै ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥

** पारवती माँ आरती **

ॐ जय पार्वती माता मैया जय पार्वती माता। ब्रह्म सनातन देवी शुभ फल की दाता ॥ ॐ जय पार्वती माता ॥

ॐ जय पार्वती माता मैया जय पार्वती माता। ब्रह्म सनातन देवी शुभ फल की दाता ॥ ॐ जय पार्वती माता ॥

अरिकुल पद्म विनाशिनि जय सेवक त्राता। जग जीवन जगदम्बा, हरिहर गुण गाता ॥ ॐ जय पार्वती माता ॥

सिंह का वाहन साजे, कुण्डल है साथा। देव बंधू जस गावत, नृत्य करत ताथा ॥ ॐ जय पार्वती माता ॥

सतयुग रूपशील अतिसुन्दर, नाम सती कहलाता। हेमांचल घर जन्मी सखियन संग राता ॥ ॐ जय पार्वती माता ॥

शुम्भ निशुम्भ विदारे, हेमांचल स्थाता। सहस्त्र भुजा तनु धरि के, चक्र लियो हाथा॥ ॐ जय पार्वती माता ॥

सृष्टि रूप तुही जननी शिवसंग रंगराता। नन्दी भृंगी बीन लाही है हाथन मदमाता ॥ ॐ जय पार्वती माता ॥

देवन अरज करत हम कवचित को लाता। गावत दे दे ताली, मन में रंगराता ॥ ॐ जय पार्वती माता ॥

श्री प्रताप आरती मैया की, जो कोई गाता। सदा सुखी नित रहता, सुख सम्पत्ति पाता ॥ ॐ जय पार्वती माता ॥

ॐ जय पार्वती माता मैया जय पार्वती माता। ब्रह्म सनातन देवी शुभ फल की दाता ॥ ॐ जय पार्वती माता ॥

** सरस्वती माँ आरती **

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता। सद्गुण, वैभवशालिनि, त्रिभुवन विख्याता ।। जय सरस्वती माता ।।

चन्द्रवदनि, पद्मासिनि द्युति मंगलकारी। सोहे हंस-सवारी, अतुल तेजधारी ।। जय सरस्वती माता ।।

बायें कर में वीणा, दूजे कर माला। शीश मुकुट-मणि सोहे, गले मोतियन माला ।। जय सरस्वती माता ।।

देव शरण में आये, उनका उद्धार किया। पैठि मंथरा दासी, असुर-संहार किया ।। जय सरस्वती माता ।।

वेद-ज्ञान-प्रदायिनी, बुद्धि-प्रकाश करो।। मोहज्ञान तिमिर का सत्वर नाश करो ।। जय सरस्वती माता ।।

धूप-दीप-फल-मेवा-पूजा स्वीकार करो। ज्ञान-चक्षु दे माता, सब गुण-ज्ञान भरो ।। जय सरस्वती माता ।।

माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे। हितकारी, सुखकारी ज्ञान-भक्ति पावे ।। जय सरस्वती माता ।।

** सन्तोषी माता आरती **

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता। अपने सेवक जन की सुख सम्पति दाता ॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥

सुन्दर चीर सुनहरी मां धारण कीन्हो। हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हो॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥

गेरू लाल छटा छबि बदन कमल सोहे। मंद हंसत करुणामयी, त्रिभुवन जन मोहे॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥

स्वर्ण सिंहासन बैठी चंवर दुरे प्यारे। धूप, दीप, मधु, मेवा, भोज धरे न्यारे॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥

गुड़ अरु चना परम प्रिय तामें संतोष कियो। संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥

शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही। भक्त मंडली छाई, कथा सुनत मोही॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥

मंदिर जग मग ज्योति मंगल ध्वनि छाई। विनय करें हम सेवक, चरनन सिर नाई॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥

भक्ति भावमय पूजा अंगीकृत कीजै। जो मन बसे हमारे, इच्छित फल दीजै॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥

दुखी दारिद्री रोगी संकट मुक्त किए। बहु धन धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिए॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥
ध्यान धरे जो तेरा वांछित फल पायो। पूजा कथा श्रवण कर, घर आनन्द आयो॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥

चरण गहे की लज्जा रखियो जगदम्बे। संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥
सन्तोषी माता की आरती जो कोई जन गावे। रिद्धि सिद्धि सुख सम्पति, जी भर के पावे॥ ॥ जय सन्तोषी माता ॥

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता। अपने सेवक जन की सुख सम्पति दाता॥

** हनुमान जी आरती **

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।

जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांके।।

अनजानी पुत्र महाबलदायी। संतान के प्रभु सदा सहाई।

दे बीरा रघुनाथ पठाए। लंका जारी सिया सुध लाए।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।

लंका जारी असुर संहारे। सियारामजी के काज संवारे।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आणि संजीवन प्राण उबारे।

पैठी पताल तोरि जम कारे। अहिरावण की भुजा उखाड़े।

बाएं भुजा असुरदल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।

सुर-नर-मुनि जन आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।

लंकविध्वंस कीन्ह रघुराई। तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।

जो हनुमान जी की आरती गावै। बसी बैकुंठ परमपद पावै।

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

** कृष्ण जी आरती **

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥ आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला । श्रवण में कुण्डल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला ।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली । लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चंद्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥
॥ आरती कुंजबिहारी की...॥

कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं । गगन सों सुमन रासि बरसै । बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिन संग, अतुल रति गोप कुमारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
॥ आरती कुंजबिहारी की...॥

जहां ते प्रकट भई गंगा, सकल मन हारिणि श्री गंगा । स्मरन ते होत मोह भंगा, बसी शिव सीस, जटा के बीच,
हरै अघ कीच, चरन छवि श्रीबनवारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
॥ आरती कुंजबिहारी की...॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू । चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू, हंसत मृदु मंद, चांदनी चंद,
कटत भव फंद, टेर सुन दीन दुखारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
॥ आरती कुंजबिहारी की...॥

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥ आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

** साईं बाबा आरती **

ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे। भक्तजनों के कारण, उनके कष्ट निवारण॥
शिरडी में अवतरे, ॐ जय साईं हरे॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे।।

दुखियन के सब कष्टन काजे, शिरडी में प्रभु आप विराजे। फूलों की गल माला राजे, कफनी, शैला सुन्दर साजे॥
कारज सब के करें, ॐ जय साईं हरे ॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे।।

काकड़ आरत भक्तन गावें, गुरु शयन को चावड़ी जावें। सब रोगों को उदी भगावे, गुरु फकीरा हमको भावे॥
भक्तन भक्ति करें, ॐ जय साईं हरे ॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे।।

हिंदू मुस्लिम सिक्ख इसाईं, बौद्ध जैन सब भाई भाई। रक्षा करते बाबा साईं, शरण गहे जब द्वारिकामाई॥
अविरल धूनि जरे, ॐ जय साईं हरे ॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे।।

भक्तों में प्रिय शामा भावे, हेमडजी से चरित लिखावे। गुरुवार की संध्या आवे, शिव, साईं के दोहे गावे॥
अंखियन प्रेम झरे, ॐ जय साईं हरे ॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे।।

ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे। शिरडी साईं हरे, बाबा ॐ जय साईं हरे॥
श्री सद्गुरु साईंनाथ महाराज की जय॥